विचार बिन्दु

कहानी जहाँ खत्म होती है, जीवन वहीं से शुरू होता है। – संजीव

फ़ेसबुक का लाइक बटन क्या गुल खिलाता है!

आभासी डिजिटल पटल पर 2009 में जब 'फ़ेसबुक' ने लाइक बटन प्रस्तुत किया, तब से यह बटन सोशल मीडिया की भाषा का अभिन्न हिस्सा बन चुका है। यह बटन एक क्लिक के ज़रिए उपयोगकर्ताओं को किसी पोस्ट, फोटो, वीडियो या टिप्पणी पर अपनी प्रतिक्रिया देने का आसान माध्यम देता है। लाइक बटन ने उपयोगकर्ताओं को शब्दों के बिना अपनी सहमति, सराहना या जुड़ाव जताने का ज़रिया दिया है। समय के साथ अब यह केवल एक बटन नहीं रहा, बल्कि इसके ज़रिए अनेक संभावनाएं साकार हुई हैं। इससे किसी पोस्ट की लोकप्रियता मापी जा सकती है। बाज़ार के ब्रांड और पेज अपनी पहुंच का इसी से विश्लेषण करते हैं। मगर हाल के वर्षों में लाइक बटन की भूमिका पर सवाल भी उठने लगे हैं। कई शोध बताते हैं कि लाइक की संख्या पर अत्यधिक ध्यान देने की लत उपयोगकर्ताओं के आत्मसम्मान तथा मानसिक स्वास्थ्य को प्रभावित कर सकती है। उपयोगकर्ता लाइक पाने की होड में कृत्रिम और आकर्षक कंटेंट पोस्ट करने की उतावली करते हैं, जिससे प्रामाणिकता में कमी आती है। एल्गोरिदम अधिक लाइक वाले पोस्ट को बढ़ावा देता है, जिससे कम आकर्षक पोस्ट दब जाते हैं। एल्गोरिदम यह तय करते हैं कि कौन-सा कंटेंट फीड में ऊपर दिखाया जाए। इन चुनौतियों के चलते फ़ेसबुक ने परीक्षण के रूप में कुछ देशों में लाइक की गिनती छिपाने का विकल्प शुरू किया है। इसका उद्देश्य है कि उपयोगकर्ता कंटेंट की गुणवत्ता पर ध्यान दें, न कि उसकी लोकप्रियता पर। पहले केवल लाइक बटन था, अब लव, हा हा, दुखद, क्रोध जैसी इमोजी प्रतिक्रियाएं भी हैं। जानकार कहते हैं कि भविष्य में यह प्रतिक्रियाएं और विविध हो सकती हैं। ऐसी परिस्थिति में फ़ेसबुक का लाइक बटन एक संक्रमण काल से गुजर रहा है। बहुतों को लगता है कि लाइक बटन का स्वरूप आगे चलकर बदलेगा, मगर इसकी उपयोगिता किसी न किसी रूप में डिजिटल बातचीत में जरूर बनी रहेगी।

कहा जाता है कि फ़ेसबुक पर 'लाइक' बटन के कई सामाजिक और मानसिक प्रभाव हो सकते हैं, जो कभी-कभी नुकसानदायक भी साबित हो सकते हैं। लोग 'लाइक्स' को एक तरह के रिवार्ड (इनाम) की तरह देखने लगते हैं। जब ज़्यादा लाइक्स मिलते हैं तो अच्छा लगता है, जिसे चिकित्सा विज्ञान में डोपामाइन इफ़ेक्ट कहा जाता है। डोपामाइन एक प्रकार का रसायन है जो दिमाग में तब रिलीज होता है, जब मस्तिष्क इनाम जैसा कुछ पाने की उम्मीद कर रहा होता है। लेकिन जब लाइक कम मिलते हैं तो निराशा होती है। अपनी किसी पोस्ट पर कम लाइक्स मिलने से व्यक्ति खुद को कम मूल्यवान महसूस कर सकता है। इसके साथ ही उपयोगकर्ता में अपनी दूसरों से तुलना की भावना जाग्रत हो उठती है। लोग दूसरों की पोस्ट और लाइक्स की संख्या से अपनी तुलना करने लगते हैं, जिससे ईर्ष्या और हीन भावना पैदा होती है जो अवसाद की हालत में ले जा सकती है। विशेषज्ञ कहते हैं कि लाइक्स अक्सर किसी पोस्ट की 'गुणवत्ता' नहीं बल्कि लोकप्रियता या टाइमिंग को दर्शाते हैं। इससे कंटेंट की असली वैल्यू को समझना मुश्किल हो जाता है। इनसे फ़ेसबुक पर फेक और सतही व्यवहार को बढ़ावा मिलता है। लोग लाइक्स पाने के लिए झूठी या अतिशयोक्तिपूर्ण बातें पोस्ट करते हैं, जिससे सोशल मीडिया पर झूठ और फरेब बढ़ता है। अपनी पोस्ट को बार-बार चेक करना कि उसे कितने लाइक्स मिले हैं, एक आदत सी बन सकती है।

लाइक बटन के आविष्कार में कई लोगों का हाथ था, और उन्होंने इसे जिस तरह से डिज़ाइन किया, वह अंततः इसके द्वारा किए गए सभी कार्यों का एक छोटा सा हिस्सा था। मूल लाइक बटन को शायद तारीफ़ों को सुविधाजनक बनाने के लिए डिज़ाइन किया गया था जो लोगों को अधिक ऑनलाइन सामग्री बनाने के लिए प्रेरित कर सके। फिर सोशल मीडिया उपयोगकर्ताओं की उस सामग्री के लिए विभिन्न भावनात्मक प्रतिक्रियाओं को दर्ज करने की इच्छा को पहचानने के लिए बदल दिया गया जिससे पता चल सके कि क्या चीजें उपयोगकर्ता का ध्यान आकर्षित कर रही है। लाइक का क्लिक लोगों की पसंद करने के व्यवहार के अलावा उनकी पहचान को स्थापित करने, समूह में स्थिति को मजबूत करने, बातचीत को विनियमित करने, दूसरों में रुचि दिखाने, सामाजिक संबंध बनाए रखने, पसंदीदा राय को बढ़ावा देने तथा और भी बहुत कुछ करने की उनकी इच्छाओं को दर्शाता है। इसीलिए अध्ययनकर्ता अब ऑनलाइन उपयोगकर्ता इंटरफ़ेस में एक-क्लिक सुविधा के भविष्य के बारे में शोध कर रहे हैं तथा ऐसे सवाल पूछ रहे हैं। शोधकर्ता उन सामाजिक और व्यावसायिक जरूरतों के भविष्य तथा उनकर समाधानों के बारे में भी अधिक व्यापक रूप से खोज कर रहे हैं जो लाइक के क्लिकों से पूरी होती हैं। यह जानने की कोशिशें लगातार जारी हैं कि भविष्य में लोगों की भावनात्मक प्रतिक्रियाओं को कैसे अधिक कुशलतापूर्वक दर्ज किया जा सकता है। इसीलिए सभी की यह जानने की उत्सुकता है कि क्या डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म लाइक बटन को एक सर्व-उद्देश्यीय वाले उपकरण के रूप में उसे पेश करना जारी रखेंगे या इसे एक स्विस आर्मी चाकू की भांति बनाएंगे जो डिजिटल बातचीत के अंत को थामे रखने के लिए होगा। यह जानने की जिज्ञासा भी बनी हुई है कि क्या लाइक बटन के प्रत्येक फ़ंक्शन का रास्ता भविष्य में अलग-अलग होगा? विशेषज्ञों की राय है कि किसी भी तरह से हो, जो भी आगे आएगा वह वर्तमान सुविधा को एक झटके में बदलने के बजाय धीरे-धीरे खुद को स्थापित करने की संभावना के साथ आएगा।

> **यह बाज़ार की व्यवस्था है। इससे उन्हें फीडबैक मिलता है कि कितने लोगों को पोस्ट पसंद आई, और वे इससे किसी उत्पाद या मत का अंदाज़ा लगा सकते हैं। इससे आभासी दुनिया में एंगेजमेंट या जुड़ाव भी बढ़ता है। ज्यादा लाइक का मतलब है कि पोस्ट अधिक लोगों तक पहुंच रही है। इससे यह समझने में भी मदद मिलती है कि किस टाइप का कंटेंट ज्यादा पसंद किया जा रहा है। इसे ऑडियंस एनालिटिक्स कहते हैं।**

यह स्पष्ट है कि लाइक बटन से राय जाहिर करना आसान होता है। उससे बिना कमेंट किए किसी पोस्ट के प्रति अपनी सहमति या पसंद जाहिर की जा सकती है। वह समय की बचत भी करता है क्योंकि सिर्फ एक क्लिक में अपनी प्रतिक्रिया दी जा सकती है। दूसरी तरफ इससेइंटरेस्ट पर्सनलाइजेशन भी होता है। जो चीजें हम लाइक करते हैं, फ़ेसबुक उसे ट्रेक करता है तथा उसी से जुड़ी सामग्री और विज्ञापन उपयोगकर्ताओं को दिखाना शुरू कर देता है। मगर इससे उपयोगकर्ता को नहीं, कंटेंट क्रिएटर और पेज ओनर को फायदा होता है। यह बाज़ार की व्यवस्था है। इससे उन्हें फीडबैक मिलता है कि कितने लोगों को पोस्ट पसंद आई, और वे इससे किसी उत्पाद या मत का अंदाज़ा लगा सकते हैं। इससे आभासी दुनिया में एंगेजमेंट या जुड़ाव भी बढ़ता है। ज्यादा लाइक का मतलब है कि पोस्ट अधिक लोगों तक पहुंच रही है। इससे यह समझने में भी मदद मिलती है कि किस टाइप का कंटेंट ज्यादा पसंद किया जा रहा है। इसे ऑडियंस एनालिटिक्स कहते हैं। इससे यूज़र बिहेवियर (उपयोगकर्ता के व्यवहार) को ट्रैक करना आसान होता है कि कौन क्या पसंद कर रहा है। इससे यूज़र प्रोफाइल बेहतर बनाई जा सकती है जिससे सटीक विज्ञापन टारगेटिंग की जा सकती है जो डिजिटल दुनिया का मूल में कारोबार है। इसी से उपयोगकर्ता की पसंद के हिसाब से विज्ञापन दिखाए जाते हैं। इससे क्या दिखाया जाए की 'कंटेंट सिफारिश प्रणाली' में सुधार लाया जाता है। अर्थात डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म उसी प्रकार का कंटेंट सुझाता है जो लोगों को पसंद आ रहा है।

अब दबाव बढ़ रहा है कि एल्गोरिदम को केवल लाइक के बजाय साझा करने, टिप्पणी करने और देखने की अवधि जैसे मापदंडों को भी महत्त्व देना चाहिए। यदि ऐसा होता है तो वह यूज़र-केंद्रित अनुभव होगा और भविष्य में यूज़र को यह चुनने की आज़ादी मिल सकती है कि वह दूसरों के लाइक देखना चाहता है या नहीं। इस तरफ बहुत कम लोगों का ध्यान जाता है कि लाइक पैटर्न से सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स लोगों की रुचियों और व्यवहार को जब ट्रैक करते हैं, तब उनकी निजता प्रभावित हो सकती है। आने वाले समय में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस की मदद से डिजिटल मीडिया संचालक यह भी समझने की कोशिश करेंगे कि किसी प्रतिक्रिया के पीछे भावनात्मक मंशा क्या है।

अब मुश्किल यह भी है कि आभासी सोशल मीडिया उपयोगकर्ताओं के वास्तविक जीवन के इतने करीब आ गया है कि लोग ऑफ़लाइन बातचीत से दूर होते जा रहे हैं। लगता है कि यह धीरे-धीरे लोगों की वास्तविक जीवन जीने की क्षमता को नष्ट कर रहा है। ऐसे में यह सवाल उठना स्वाभाविक ही है कि क्या लाइक बटन चालू रहेगा तथा अधिक विकसित हो कर फैलेगा? बहुतों को लगता है कि नई आदतें लाइक को अप्रचलित बना सकती है। और दूसरे नियामक एजेंसियां और नीति निर्माता डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म पर अंकुश लगा सकते हैं जिससे लाइक की बाज़ार के लिए उपयोगिता बाधित हो। मगर दूसरी तरफ, कानूनी और नियामक हस्तक्षेप लाइक बटन को नई ताकत भी दे सकते हैं। लाइक बटन शून्य में मौजूद नहीं है। यदि ऐसे सक्रिय कानून बनते हैं जो लोगों को किसी संदेश को साझा करने से पहले थोड़ा रुककर उसके संभावित परिणामों पर विचार करने की व्यवस्था करते हों, तो प्रक्रिया मंक टकराव के हालत रोके जा सकते हैं और लोग प्रतिक्रिया दर्ज करने के लिए सरल लाइक बटन का उपयोग कर सकते हैं। किसी डेटा को पसंद करना एल्गोरिदम में अधिक महत्व देने वाले कारक के रूप में नयी पहचान प्राप्त कर सकता है। विभिन्न अध्ययनों में लाइक बटन की जटिलताओं और संभावनाओं का पता चला है तो साथ ही यह भी पाया गया है कि यह बटन एक साथ इतनी सारी सुविधाएं प्रदान करता है कि अब वह सोशल मीडिया पर एक जरूरी उपकरण बन चुका है। ऐसे में यह देखना दिलचस्प होगा कि फेसबुक का लाइक बटन कितना लाइक किया जाता है।

–अतिथि संपादक,
राजेन्द्र बोड़ा
(वरिष्ठ पत्रकार एवं विश्लेषक)

खादी से हस्तशिल्प तक: स्वदेशी आंदोलन की नई परिभाषा

अविनाश जोशी

स्वदेशी सोच आधुनिक भारतीय समाज के लिए एक महत्वपूर्ण मुद्दा है। इसका मतलब है अपनी देशीय उत्पादों को प्राथमिकता देना, उन्हें समर्थन देना और स्वदेशी उत्पादों की उपयोगिता बढ़ाना। स्वदेशी सोच विशेष रूप से अर्थव्यवस्था, विज्ञान, प्रौद्योगिकी और सांस्कृतिक क्षेत्रों में महत्वपूर्ण है। यह देश की आत्मनिर्भरता और समृद्धि के लिए एक महत्वपूर्ण अभियान है।

भारतीय वस्तुओ के प्रति अनुराग एवम विदेशी वस्तुओ का बहिष्कार यही तो हमारा मुख्य धर्म होना चाहिए। आज की पीढ़ी को यह सब बताना होगा हमे स्वदेशी उद्योगों, शिक्षा, साहित्य, कला एवं संस्कृति को बढ़ावा देना होगा। फैशन ही सही लेकिन स्वदेशी मोह हमारा मुख्य उद्देश्य होना चाहिए। खादी एवम सूती कपड़े का प्रचलन स्वदेशी उत्पाद के प्रति जागरूकता का ज्वलंत उदाहरण है। स्थानीय बाजार में स्वदेशी ब्रांड्स के उत्पादों और सेवाओं को समर्थन देना और बढ़ावा देना अत्यंत महत्वपूर्ण है। इन सभी पहलों के साथ, स्वदेशी ब्रांड्स को उत्पादों और सेवाओं के लिए अधिक विश्वसनीय, उपयुक्त और रचनात्मक समाधान प्रदान करने के लिए प्रयास करना होगा।

स्वदेशी सोच देश की अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण योगदान करती है क्योंकि यह उत्पादन, रोजगार, और आय को स्थानीय स्तर पर बढ़ाती है। स्वदेशी उत्पादन और सेवाओं का समर्थन करने से देश में निजी और सार्वजनिक क्षेत्र का विकास होता है, जिससे सार्वजनिक उत्पादन और सेवाओं की गुणवत्ता भी बढ़ती है। इसके अलावा, स्वदेशी सोच भ्रष्टाचार को कम करने में भी मदद कर सकती है, क्योंकि स्थानीय उत्पादन और सेवाओं को समर्थन करने से विभाजन और अन्य संगठनात्मक असंतोष कम होता है।

स्वदेशी हमारे राष्ट्रीय स्वाधीनता संग्राम का मूल-मंत्र था, कहने में कोई अतिशयोक्ति नहीं। उन्नीसवीं सदी में दादा भाई नौरोजी की 'ड्रेन थ्योरी' हो या रमेशचंद्र दत्त की लिखी 'भारत का आर्थिक इतिहास' या सखाराम गणेश देउस्कर लिखित 'देशेर कथा' जैसी पुस्तकें हो, सभी के केंद्र में औपनिवेशिक शासन-तंत्र द्वारा देसी संसाधनों का दोहन व देशी धन-संपदा के विलायत में पलायन को रोकना मुख्य सरोकार थे। आधुनिक हिंदी साहित्य के जनक माने जाने वाले भारतेंदु हरिश्चंद्र ने अपने लेखन से स्वदेशी की अलख जगाई। 1905 का बंग-भंग विरोधी आंदोलन भी स्वदेशी की भावना से ओतप्रोत था जब बंगाल में विदेशी वस्तुओं की होली जलाई गई और उनके बहिष्कार पर बल दिया गया। इस स्वदेशी भाव को राष्ट्रीय स्तर पर बहुआयामी स्वरूप प्रदान किया महात्मा गांधी ने 1920 में असहयोग आंदोलन आरंभ करके। उन्होंने इसे न केवल विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार तथा उनके अग्निदाह तक सीमित रखा, बल्कि उद्योग-शिल्प, भाषा, शिक्षा, वेश-भूषा आदि सब पर स्वदेशी का रंग चस्पा कर दिया।

स्वदेशी ब्रांड्स के सामने अंतरराष्ट्रीय ब्रांड्स के प्रति लोगों का विश्वास और विचारशीलता बढ़ाने हेतु स्वदेशी ब्रांड्स को अपने उत्पादों और सेवाओं की उच्च गुणवत्ता और प्रदर्शन को संदर्भित करना होगा। लोगों को स्वदेशी ब्रांड्स के उत्पादों के सामाजिक और पर्यावरणीय मूल्यों को समझाना चाहिए। स्वदेशी ब्रांड्स को अपने ब्रांड इमेज और विश्वसनीयता को मजबूत करने के लिए प्रयास करना होगा। उन्हें नई तकनीकों का उपयोग करके उत्पादों और सेवाओं को बेहतर बनाने का प्रयास करना होगा।

स्वदेशी वस्तुओं के मोह को बढ़ाने हेतु लोगों को स्वदेशी उत्पादों के बारे में जागरूक करें, उनके गुणवत्ता, स्थानीय उत्पादन और पर्यावरणीय लाभों के बारे में बताएं। स्वदेशी उत्पादों का समर्थन करने के लिए लोगों को प्रेरित करें, विशेष रूप से स्थानीय व्यवसायों को समर्थन दें। स्वदेशी उत्पादों की अधिक उपलब्धता सुनिश्चित करें, यह ऑनलाइन या अधिक स्थानीय दुकानों में उपलब्ध हो सकता है। स्वदेशी उत्पादों का उपयोग करने से देश की समृद्धि और आत्मनिर्भरता में योगदान के महत्व को समझाएं। स्वदेशी ब्रांड्स को बढ़ावा देने के लिए उनका ब्रांड इमेज और विश्वसनीयता को मजबूत करें। स्वदेशी उत्पादों के लिए स्थानीय बाजारों और दुकानों में यात्रा करें, और अपने समर्थन का एक विशेष रूप उन्हें दिखाएं। इन तरीकों का अनुसरण करके, स्वदेशी उत्पादों के मोह को बढ़ा सकते हैं और देश के स्थानीय अर्थव्यवस्था को समर्थन दे सकते हैं।

ग्रामीण हाट और हस्तशिल्प स्थानीय स्तर पर स्वदेशी उत्पादों के विकास और प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। ये उत्पादकों को सीधे बाजार तक पहुँचने का माध्यम प्रदान करते हैं और स्थानीय विकास को समर्थन देते हैं। ग्रामीण हाट और हस्तशिल्प स्थानीय कला, शिल्प, और संस्कृति को प्रमोट करते हैं, जिससे उनकी अर्थात्मकता बढ़ती है। ये हाट और हस्तशिल्प क्षेत्र में रोजगार के अवसर प्रदान करते हैं, विशेष रूप से महिलाओं और गरीब वर्ग के लोगों के लिए। ये ग्रामीण हाट और हस्तशिल्प स्थानीय उत्पादकों के उत्पादों को बाजार में प्रसारित करने का माध्यम होते हैं। ये हाट और हस्तशिल्प स्थानीय शिल्पकला, बुनाई, और अन्य परंपरागत कलाओं को बचाव और संरक्षण का माध्यम भी बनाते हैं। ये स्थानीय समुदाय के आर्थिक विकास में सहायक होते हैं, जिससे ग्रामीण क्षेत्रों का उत्थान होता है। इस प्रकार, ग्रामीण हाट और हस्तशिल्प स्थानीय विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाकर स्वदेशी उत्पादों के प्रसार और समर्थन में मदद करते हैं।

स्वदेशी सोच को केवल एक दिखावा मानना गलत हो सकता है। हालांकि, कुछ लोग इसे सिर्फ आधुनिक एवं कुछ अलग दिख सके इसका माध्यम मानते हैं, लेकिन असल में, स्वदेश सोच एक विचारशीलता और सामाजिक परिवर्तन की दिशा है। यह उत्पादन, वित्तीय स्वावलंबन, और स्थानीय समुदायों के विकास को समर्थन करता है। इसका उदाहरण उत्पादों की स्थानीय खरीदारी, स्थानीय उत्पादन को प्रोत्साहित करना, और विदेशी निवेशों के साथ समर्थन का एकीकरण हो सकता है। इसलिए, स्वदेश सोच वास्तव में सामाजिक और आर्थिक परिवर्तन की अवधारणा है, जो समृद्धि और समाज की उन्नति की दिशा में मदद कर सकती है।

स्वदेशी सोच में खादी का महत्वपूर्ण योगदान है। खादी एक परंपरागत भारतीय वस्त्र है जो देश की स्वतंत्रता संग्राम के समय महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। खादी का उत्पादन देश के ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार का स्त्रोत बनाता है और स्थानीय विकास को समर्थन करता है। खादी के उत्पादन में श्रमिकों की संख्या बहुत बड़ी होती है, जिससे ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार के अवसर प्राप्त होते हैं। यह उत्पादन भी परंपरागत और स्थानीय वस्त्रों का उत्पादन प्रोत्साहित करता है, जो स्थानीय बाजारों को समृद्ध करता है। इसके अलावा, खादी के उत्पादन में विदेशी निवेशों की कमी होती है, जिससे देश की आत्मनिर्भरता को मजबूती मिलती है। खादी उत्पादन और उपभोक्ता के बीच संबंध भी स्थापित करता है, जो राष्ट्रीय एकता और गर्व को बढ़ाता है। इस तरह, खादी स्वदेशी सोच के माध्यम से सामाजिक, आर्थिक, और सांस्कृतिक विकास में महत्वपूर्ण योगदान करती है।

स्वदेशी मानसिकता और आधुनिक फैशन का संगम आधुनिक जीवनशैली में एक महत्वपूर्ण दिशा है। आज के समय में, लोग अपने स्थानीय वस्त्र, शैली, और विरासत को महत्व देते हैं, जो स्वदेशी मानसिकता को प्रोत्साहित करता है। आधुनिक फैशन में स्थानीय अनुभूति, परंपरा, और कला को शामिल किया जाता है। यह लोगों को अपनी संस्कृति के प्रति गर्व महसूस कराता है और स्थानीय कलाओं को प्रोत्साहित करता है। स्वदेशी मानसिकता के साथ, लोग अपने स्थानीय उत्पादों को पसंद करने और समर्थन करने के लिए प्रेरित होते हैं, जिसमें स्थानीय वस्त्र, उपहार, और आभूषण शामिल हो सकते हैं। इस तरह, स्वदेशी मानसिकता और आधुनिक फैशन दोनों को ही एक मंत्र बना सकते हैं, जो स्थानीय समुदायों को समृद्धि और समाज में गर्व का अहसास कराते हैं।

–अविनाश जोशी,
स्वतन्त्र पत्रकार एवम लेखक

स्कूलों की मरम्मत के लिए 102.4 लाख रुपये मंजूर

निम्बाहेड़ा। निम्बाहेड़ा-छोटीसादड़ी विधानसभा क्षेत्र के विभिन्न क्षतिग्रस्त विद्यालयों की मरम्मत के लिए पूर्व यूडीएच मंत्री एवं विधायक श्रीचंद कृपलानी की अनुशंसा पर राज्य सरकार के राजस्थान स्कूल शिक्षा परिषद् के द्वारा निम्बाहेडा ब्लॉक में 4 तथा छोटीसादड़ी ब्लॉक में 5 राजकीय विद्यालयों के क्षितठास्त भवनों की मरम्मत के लिए 102.4 लाख रुपये की प्रशासनिक स्वीकृति जारी की है। विधायक कृपलानी ने बताया कि स्टेट प्रोजेक्ट डायरेक्टर समठा शिक्षा एंड स्कूल शिक्षा की कमिश्नर अनुपमा जोरवाल द्वारा निम्बाहेड़ा ब्लॉक के 4 क्षतिग्रस्त विद्यालयों की मरम्मत के लिए 59 लाख रूपये तथा छोटीसादड़ी ब्लॉक के 5 क्षतिग्रस्त विद्यालयों की मरम्मत के लिए 43.40 लाख रूपये की प्रशासनिक स्वीकृति जारी की है। इनमें निम्बाहेड़ा ब्लॉक के राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय मंडला चारण के लिए 13 लाख, राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय कनेरा के लिए 16 लाख, तथा राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय भुजिया खेड़ी के लिए 17 लाख रूपये की स्वीकृति जारी की गई है।

हलैना का संस्कृत स्कूल जर्जर हालत में

हलैना (निस)। संस्कृत शिक्षा विभाग के अधीनस्थ कस्वा हलैना में संचालित राजकीय संस्कृत उच्च प्राथमिक स्कूल के भवन की हालत दयनीय होने से विद्यार्थी व गुरूजन बेहद परेशान है, ये स्कूल साल 1996 में खुला और साल 2006 में क्रमोन्नत हुआ और साल 2007 में करीब 50 लाख की लागत से भवन का निर्माण हुआ। ये भवन गुजरे 18 साल के अन्दर ही जर्जर होने लग गया, भवन के कमरों की दीवारों में दरारे पड गई और हल्की बरसात होने पर छत्त से पानी टपकता है तथा दीवारों से सीमेन्ट व बजरी-कंकड गिरते है। भवन के अभाव में बच्चें खुले आसमान के नीचे और मैदान में बैठ कर पढने को मजबूर है। संस्था प्रधान भागचन्द मीणा की सूचना पर संभागीय संस्कृत शिक्षा अधिकारी सतीश बागौरिया ने 29 जुलाई को कस्वा हलैना के सरकारी संस्कृत स्कूल की हालत देखी और जर्जर भवन के अन्दर प्रवेश पर पाबन्दी लगा दी। साथ ही प्रशासन,समसा,संस्कृत शिक्षा विभाग के आलाधिकारियों स्कूल की हालत से अवगत करा दिया। संस्कृत स्कूल के संस्था प्रधान भागचन्द मीणा ने बताया कि 18 साल के अन्दर ही भवन कीइ हालत जर्जर होना चिन्ता का विषय है,जिसकी सूचना विभाग को भेज दी। स्कूल में कक्षा एक से आठवी तक 70 विद्यार्थी पढते है और संस्था प्रधान सहित सात शिक्षक-शिक्षिका लगे हुए है। भवन का अभाव होने से बच्चों की पढाई प्रभावित हो गई। संभागीय संस्कृत शिक्षा अधिकारी सतीश बागौरिया ने बताया कि कस्वा हलैना के संस्कृत स्कूल का निरीक्षण किया,जिसकी हालत बेहद खराब है,बच्चे खुले मैदान में पढ रहे है,जिन्हे बरसात होने पर बचाव नजर नही आता। स्कूल के जर्जर भवन के अन्दर प्रवेश पर रोक लगा कर संस्था प्रधान से बोल दिया कि भवन में बच्चों सहित कोई भी कर्मचारी व अभिभावक प्रवेश नही करे।

नवाचारों से संवरता भविष्य, राजस्थान बन रहा शिक्षा का पथप्रदर्शक

राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 की क्रियान्विति के अनुरूप राजस्थान शैक्षिक उन्नित की दिशा में तेज़ी से अठासर हो रहा है। शिक्षा के वर्तमान परिदृश्य में समठा शिक्षा अभियान के तहत राज्य में कई नवाचारी पहलें की गई हैं, जिन्होंने पारंपरिक शिक्षा पद्धित को प्रगतिशील स्वरूप प्रदान किया है। इन नवाचारों के चलते अब सीखने-सिखाने की प्रक्रिया केवल पाठ्यपुस्तकों तक सीमित नहीं रही बल्कि यह डिजिटल तकनीक, परियोजना आधारित अधिगम और कौशल विकास जैसे आधुनिक आयामों तक विस्तृत हो चुकी है। शिक्षा विभाग द्वारा की गई ये पहलें न केवल सराहनीय हैं बल्कि शिक्षा की गुणवत्ता, समावेशिता और तकनीकी सशक्तता को भी नई दिशा दे रही हैं । समग्रशिक्षा अभियान के माध्यम से विद्यार्थियों की विद्यालयों तक पहुंच सरल हुई है, अधिगम के परिणाम बेहतर हुए हैं और समावेशी विकास को बल मिला है। इस अभियान ने न केवल शिक्षा प्रणाली में बदलाव की गति को तेज किया है बल्कि राजकीय विद्यालयों में नामांकन दर में भी उल्लेखनीय वृद्धि दर्ज की है। राज्य में शिक्षा के प्रत्येक स्तर पर नवाचारों को अपनाकर एक व्यापक परिवर्तन लाया जा रहा है। अब ध्यान गुणवत्तापूर्ण, समावेशी और कौशल आधारित शिक्षा प्रणाली को और अधिक उन्नत एवं प्रभावी बनाने पर केंद्रित है।

नवाचारों ने बढ़ाया राजकीय विद्यालयों का दायरा – शिक्षा विभाग द्वारा किए जा रहे निरंतर नवाचारों का प्रभाव अब धरातल पर स्पष्ट रूप से दिखाई देने लगा है। राजकीय विद्यालयों में न केवल विद्यार्थियों का नामांकन तेजी से बढ़ रहा है, बल्कि परीक्षा परिणामों के स्तर पर भी इन विद्यालयों के विद्यार्थी निजी संस्थानों को कड़ी टक्कर दे रहे हैं। हाल ही में जारी हुए कक्षा 5वीं, 8वीं, 10वीं और 12वीं के बोर्ड परिणाम इसका प्रत्यक्ष प्रमाण हैं। हजारों विद्यार्थियों ने 95 प्रतिशत से अधिक अंक प्राप्त कर राजकीय विद्यालयों की छवि को एक नई पहचान दी है। परिणामों में निरंतर सुधार देखा जा रहा है, जो पिछले वर्षों की तुलना में कहीं अधिक संतोषजनक और उत्साहवर्धक है। डिजिटल प्लेटफॉर्म के माध्यम से चलाया जा रहा प्रवेशोत्सव अभियान भी राजकीय विद्यालयों में नामांकन दर में उल्लेखनीय वृद्धि का एक प्रमुख कारण बना है। अभिभावकों और विद्यार्थियों में इन विद्यालयों के प्रति विश्वास लगातार बढ़ रहा है, जिससे शिक्षा की गुणवत्ता और पहुंच दोनों में समांतर रूप से सुधार हो रहा है। यही वजह है कि पिछले सत्र की तुलना में वर्तमान सत्र में करीब दोगुना नामांकन दर्ज किया गया है।

प्राथमिक शिक्षा को नई दिशा : राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 में प्राथमिक शिक्षा की गुणवत्ता और मातृभाषा में प्रारंभिक शिक्षण पर विशेष बल दिया गया है। इसी दिशा में शिक्षा विभाग द्वारा ठोस कदम उठाए जा रहे हैं जिससे न केवल शिक्षा की बुनियाद मजबूत हो रही है बल्कि विद्यार्थियों में प्रारंभ से ही सीखने की सही समझ विकसित हो रही है। प्रदेश के 402 पीएमश्री विद्यालयों में पूर्व-प्राथमिक कक्षाओं की शुरुआत की गई है जिससे तीन से छह वर्ष आयु वर्ग के बच्चों को सुनियोजित प्रारंभिक शिक्षा मिल रही है। साथ ही, स्वामी विवेकानंद राजकीय मॉडल सीबीएसई अंठोजी माध्यम विद्यालयों में पहली बार प्राथमिक कक्षाएं प्रारंभ कर इन विद्यालयों को पूर्ण शैक्षिणक संस्थान के रूप में विकसित किया जा रहा है। कक्षा 1 से 5 तक के 1.15 लाख शिक्षकों को फाउंडेशनल लिटरेसी एंड न्यूमेरेसी (एफएलएन) आधारित प्रशिक्षण प्रदान किया जा रहा ह, ताकि वे बच्चों को बेहतर भाषा और गणितीय कौशल प्रदान कर सकें। इसके अतिरिक्त, 45 हजार विद्यालयों में गतिविधि आधारित शिक्षण (एबीएल) किट की उपलब्धता सुनिश्चित की गई है जिससे पढ़ाई को रोचक, अनुभवात्मक और प्रभावी बनाया जा सके। ये प्रयास न केवल प्राथमिक शिक्षा को समृद्ध बना रहे हैं बल्कि भविष्य के नागरिकों की बौद्धिक नींव को भी सुदृढ़ कर रहे हैं।

डिजिटल प्लेटफार्म ने शिक्षा को बनाया हाईटेक : शिक्षा के वैश्विक आदान-प्रदान और डिजिटल माध्यमों की पहुंच ने पारंपरिक सीमाओं को तोड़ते हुए सीखने-सिखाने की परिभाषा को ही बदल दिया है। स्मार्ट डिवाइस, ई-लर्निंग प्लेटफॉर्म और डिजिटल टूल्स ने शिक्षा को न केवल अधिक सुलभ बल्कि प्रभावशाली और व्यक्तिगत भी बना दिया है। राजस्थान में डिजिटल शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए बड़े स्तर पर कदम उठाए गए हैं। प्रदेश के 13,976 विद्यालयों में आईसीटी लैब और 17,421 स्मार्ट क्लासरूम की स्थापना इस दिशा में एक मील का पत्थर है। इससे विद्यार्थी तकनीकी रूप से सशक्त शिक्षण वातावरण में सीखने का अनुभव प्राप्त कर रहे हैं। डिजिटल शिक्षा को और अधिक सशक्त बनाने के लिए कक्षा 8वीं, 10वीं और 12वीं के 55,000 से अधिक मेधावी विद्यार्थियों को टैबलेट वितरित किए गए हैं जिनमें 3 वर्षों का नि:शुल्क इंटरनेट कनेक्शन भी शामिल है। यह कदम छात्रों को आत्मनिर्भर और तकनीकी रूप से दक्ष बनाने की दिशा में महत्वपूर्ण साबित हो रहा है। शिक्षा गुणवत्ता में उन्नयन के लिए शिक्षा संकुल में हाल में विद्या समीक्षा केंद्र (वीएसके) स्थापित किया गया है। इसमें डेटा, तकनीक एवं एआई के प्रयोग से विद्यार्थियों के परिणाम एवं समठा विकास का डेटा प्राप्त किया जा सकता है। इसके साथ ही, शाला दर्पण पोर्टल के माध्यम से विद्यालयों, शिक्षकों और विद्यार्थियों का रियल टाइम डेटा उपलब्ध हो रहा है जिससे पारदर्शिता और प्रभावशीलता दोनों में अभूतपूर्व वृद्धि हुई है। यह पोर्टल न केवल प्रशासनिक कार्यों को सरल बना रहा है बल्कि नीति निर्धारण में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है।

बालिका शिक्षा को दिया जा रहा प्रोत्साहन : राजस्थान सरकार और शिक्षा विभाग बालिका शिक्षा को सशक्त बनाने के लिए निरंतर प्रयासरत हैं। शहरी क्षेत्रों से लेकर दूरस्थ ग्रामीण अंचलों तक बालिकाओं को शिक्षा की मुख्यधारा से जोड़ने के लिए बहुआयामी योजनाएं लागू की जा रही हैं। प्रदेश में 342 कस्तूरबा गांधी बालिका आवासीय विद्यालयों का संचालन किया जा रहा है, जो विशेष रूप से वंचित और पिछड़े वर्ग की बालिकाओं को सुरक्षित और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान कर रहे हैं।

डॉ.अमृता कटारा,
सहायक जनसंपर्क अधिकारी,
डीआईपीआर,जयपुर, राजस्थान।

राशिफल

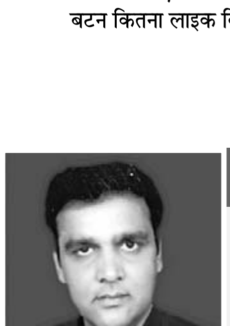

पंडित अनिल शर्मा

बुधवार 30 जुलाई, 2025

सावन मास, शुक्ल पक्ष, षष्ठि तिथि, बुधवार, विक्रम संवत 2082, हस्त नक्षत्र रात्रि 9:53 तक, सिद्ध योग रात्रि 3:40 तक, कौलव करण दिन 1:44 तक, चन्द्रमा आज कन्या राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-कर्क चन्द्रमा-कन्या, मंगल-कन्या, बुध-कर्क, गुरू-मिथुन, शुक्र-मिथुन, शनि-मीन, राहु-कुम्भ, केतु-सिंह राशि में।

आज सर्वार्थ सिद्धि योग सूर्योदय से रात्रि 9:53 तक, रवियोग और कुमार योग रात्रि 9:53 तक बने रहेंगे। राजयोग रात्रि 9:53 से सूर्योदय तक है। आज कल्की जयन्ती, श्रियाल छठ, वर्षा षष्ठी है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: लाभ-अमृत सूर्योदय से 9:13 तक, शुभ 10:53 से 12:33 तक, चर 3:53 से 5:33 तक, लाभ 5:33 से सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 12:00 से 1:30 तक। सूर्योदय 5:54, सूर्यास्त 7:12

मेष

व्यक्तिगत परेशानियां दूर होने लगेगी। अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। स्वास्थ्य में सुधार होगा।

वृष
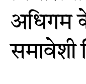

परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। महत्वपूर्ण कार्यों के संबंध में सोच-विचार हो सकता है। व्यावसायिक कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा।

मिथुन
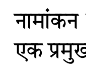

घर-परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा। परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

कर्क
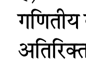

व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी। नवीन कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। परिवार में शुभ संदेश प्राप्त होंगे।

सिंह
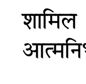

आर्थिक/वित्तीय मामलों में संतुलन बना रहेगा। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। आय में वृद्धि होगी। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता से बनने लगेंगे।

कन्या
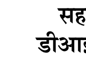

व्यावसायिक आर्थिक मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक संपर्क बनेंगे। नवीन कार्यों में उचित सफलता मिलेगी।

तुला
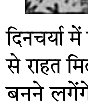

व्यावसायिक खर्चों पर नियंत्रण रखें। नौकरीपेशा व्यक्तियों को भागदौड़ रहेगी। आज अनर्गल कार्यों में समय खराब हो सकता है।

वृश्चिक
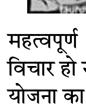

आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। आय में वृद्धि होगी। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे।

धनु
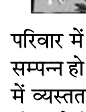

व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। व्यावसायिक कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। चलते कार्यों में प्रगति होगी। परिवार में मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

मकर
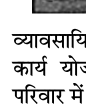

नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक विवादों से राहत मिल सकती है। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा।

कुंभ
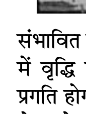

चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। शुभ कार्यों में व्यवधान हो सकता है। आज आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। बनते कार्य बिगड़ सकते हैं। स्वास्थ्य का ध्यान रखें।

मीन
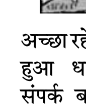

परिवार में धार्मिक-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है।